7. रवीन्द्रनाथ टैगोर का शिक्षा-दर्शन

भारतीय शिक्षाशास्त्रियों की अखंड परंपरा की एक प्रमुख कड़ी के रूप में रवीन्द्रनाथ टैगोर का नाम बड़े ही आदर के साथ लिया जाता है। भारतीय शिक्षा दर्शन को प्रभावित करनेवाले विचारकों में गुरूदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर का नाम विशेष रूप उल्लेखनीय है। टैगोर महान कवि, दार्शनिक और शिक्षाशास्त्री के रूप में जाने जाते हैं। आधुनिक विचारों और भारतीय परंपराओं के सामंजस्य के सिद्धांत पर उनका शिक्षा दर्शन आधारित है। उन्हें भारत में आधुनिक शिक्षा के सबसे बड़ा पैरोकार कहने में किसी तरह की अतिशयोक्ति नहीं होगी। शिक्षा की महत्ता स्थापित करने के लिए और उसे नैतिकता के साथ जोड़ने के लिए उन्होंने लंबा संघर्ष किया। रवीन्द्रनाथ टैगोर भारतीय शिक्षा दर्शन में अपना महत्वपूर्ण विचार व्यक्त किया है जिसका विवेचन हम उनके शिक्षा सम्बन्धी विचार में करेंगें।

शिक्षा सम्बन्धी विचार : रवीन्द्रनाथ टैगोर शिक्षा जगत के महानतम चिन्तकथे। उनके शिक्षा सम्बन्धी विचार और प्रयोग बिल्कुल नये और मौलिक जान पड़ते हैं। यद्यपि उनमें से अधिकांश को प्राचीन समय के शिक्षा शास्त्रियों द्वारा किसी न किसी रूप में विकसित किया जा चुका था और तत्कालीन शिक्षाशास्त्रियों द्वारा कम या अधिक मात्रा में प्रयोग किया जा रहा है। टैगोर ऐसे नैसर्गिक गुणों, शक्तियों तथा क्षमताओं से सम्पन्न प्रतिभाशाली व्यक्ति थे जिससे वे केवल दार्शनिक ही नहीं वरन एक महान शिक्षाशास्त्री भी बन गये। उन्होंने सबसे पहले पाश्चात्य शिक्षाविदों के विचारों का गूढ़ अध्ययन किया, विभिन्न अनुभवों द्वारा शिक्षा के रहस्यों का ज्ञान प्राप्त किया और अन्त में अपने अनुभव के आधार पर खुद अपने शिक्षा- सम्बन्धी सिद्धातों का प्रतिपादन किया। वे अपने अथक प्रयास के कारण महान शिक्षाशास्त्री बने इतना ही नहीं शिक्षा को जमीन से जोड़ने का भरपूर प्रयास किया जिसका जीता-जागता ज्वलन्त नमूना उनका शांति निकेतन है। शांतिनिकेतन में किये गये शिक्षा सम्बन्धी प्रयोगों के आधार पर टैगोर ने अपने शिक्षा सिद्धांत की उपयोगिता और श्रेष्ठता को साबित कर दिया। टैगोर संसार की सभी वस्तुओं के बीच मेल या एकता देखते थे। अतः उनका विश्वास था कि यही एकता सृष्टि है तथा इसी में 'सत्य' का निवास स्थान है। ऐसे सत्य की खोज करना ही मानव जीवन का परम लक्ष्य है साथ ही शिक्षा का भी यही लक्ष्य है। इसलिए सच्ची शिक्षा वही है जो इस 'सत्य' का दर्शन कराते हुए सभी वस्तुओं के बीच

Scanned by CamScanner

Scanned by CamScanner

सामंजस्य तथा प्रेम भावना विकसित करने का प्रयास करे। कहने का तात्पर्य यह है कि सच्ची शिक्षा वही है जो मानव जीवन के विभिन्न तत्वों में सामंजस्य स्थापित करते हुए उसके शारीरिक, मानसिक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक पक्षों के बीच एकरूपता प्रदान करे ताकि मानव जीवन के परम लक्ष्य 'सत्य' को प्राप्त किया जा सके। टैगोर के अनुसार-शिक्षा को जीवन से अलग नहीं किया जा सकता है अतः शिक्षा को मानव जीवन से सम्बन्धित रहना चाहिए। यानि बच्चों की शिक्षा प्राकृतिक ढ़ंग से होनी चाहिए ताकि बच्चों का सामंजस्य प्रकृति तथा वातावरण के साथ स्थापित हो सके। साथ ही बच्चे वास्तविक जीवन का सही ज्ञान प्राप्त कर सके। शिक्षा के द्वारा बच्चों के सृजनात्मक प्रवृत्ति तथा सौंदर्य भावना का अनिवार्य रूप से विकास होना चाहिए। शिक्षा के द्वारा बच्चों के शारीरिक, मानसिक तथा आत्मिक विकास अतिआवश्यक हो जाता है।

टैगोर अपने शिक्षा दर्शन में शिक्षक और छात्र के बीच परस्पर सम्बन्ध पर विशेष रूप से बल दिया है। टैगोर के शब्दों में, "शिक्षा का भवन सब मिलकर बनाते हैं, केवल शिक्षक और प्रबन्धक ही नहीं वरन् विद्यार्थी भी।"[1] टैगोर प्रकृति की शक्ति तथा गुणों को शिक्षा का सब से बड़ा साधन मानते थे। यही कारण है कि उन्होंने पुस्तकों को शिक्षा में ज्यादा महत्व न देकर प्रकृति को विशेष महत्व दिया। फलतः इसी उद्देश्य की प्राप्ति के लिए टैगोर ने शांति निकेतन की स्थापना प्रकृति की गोद में किया ताकि छात्र प्राकृतिक वातावरण में प्रत्यक्ष रूप से ज्ञान की प्राप्ति करने का भरपूर प्रयास कर सके। प्रकृति के साथ मानव का वैसा ही सम्बन्ध होना चाहिए जैसा अन्य व्यक्तियों के साथ सम्बन्ध पाया जाता है। टैगोर ने शिक्षा का कार्य सम्पूर्ण सृष्टि से जीवन का सामंजस्य स्थापित होना बतलाया है। लेकिन इस तरह का सामंजस्य स्थापित करने के लिए व्यक्ति की समस्त शक्तियाँ पूरी तरह विकसित करने की जरूरत है और उसे 'पूर्ण मनुष्यत्व' प्राप्त कर लेना अनिवार्य है। टैगोर ने शिक्षा से सम्बन्धित किसी तरह की पुस्तकें नहीं लिखी लेकिन उनके लेखों तथा भाषणों में उनके जो शिक्षा सम्बन्धी विचार व्यक्त किये गये हैं वे अत्यंत ही सारगर्भित, जीवनोपयोगी और प्रकृति प्रेम से जुड़ा हुआ है।

शिक्षा का अर्थ : टैगोर ने शिक्षा का प्रयोग व्यापक अर्थ में किया है। उन्होंने अपनी पुस्तक 'पर्सनालिटी' में लिखा है, "सर्वोच्च शिक्षा वही है जो सम्पूर्ण सृष्टि से हमारे जीवन का सामंजस्य स्थापित करती है।"[2] दूसरे शब्दों में सर्वोतम शिक्षा वह है, जो हमें सूचना तथा ज्ञान ही प्रदान नहीं करती वरन् हमारे जीवन का विश्व के समस्त जीवों के साथ मेल उत्पन्न करती है।

टैगोर का कहना है कि सम्पूर्ण सृष्टि से हमारे जीवन का सामंजस्य तभी हो सकता है जब हमारी समस्त शक्तियाँ पूर्ण रूप से विकसित होकर उच्चतम विन्दु पर पहुँच जाय। इसे ही टैगोर पूर्ण मनुष्यत्व की संज्ञा देते हैं। शिक्षा का कार्य है- मानव को

इस पूर्ण मनुष्यत्व की स्थिति तक पहुँचना। टैगोर का कहना है कि शिक्षा विकास की एक प्रक्रिया है जो मनुष्य का शारीरिक, बौद्धिक, आर्थिक, व्यावसायिक धार्मिक तथा आध्यात्मिक विकास करती है। यही कारण है कि टैगोर ने प्राचीन भारतीय शिक्षा को अपनी मान्यता प्रदान करते हैं। इस आदर्श के अनुसार-शिक्षा मनुष्य को आध्यात्मिक ज्ञान देकर उसे जीवन और मृत्यु से मुक्त करती है। अतएव शिक्षा के द्वारा उस ज्ञान का संग्रह करना जरूरी हो जाता है जो उसके पूर्वजों द्वारा संचित किया जा चुका है। अतएव टैगोर सार्थक एवं जीवनोपयोगी शिक्षा को ही सच्ची शिक्षा की संज्ञा देते है।

शिक्षा दर्शन के मूलभूत सिद्धांत : टैगोर के शिक्षा दर्शन के प्रमुख मूलभूत सिद्धांत इस प्रकार है- शिक्षा का माध्यम मातृभाषा होना चाहिए। शिक्षा को राष्ट्री होनी चाहिए। पढ़ने और सीखने की प्रक्रिया के दौरान बच्चों को पूरी आजादी मिलनी चाहिए। जन साधारण को शिक्षा देने के लिए प्राथमिक विद्यालयों को पुनर्जीवित किया जाना चाहिए। शिक्षण विधि का आधार जीवन, प्रकृति तथा समाज की वास्तविक परिस्थितियाँ होनी चाहिए। छात्रों में संगीत, अभिनय और चित्रकला की योग्यताओं का विकास किया जाना चाहिए। छात्रों को भारतीय विचारधारा तथा भारतीय समाज की पृष्ठभूमि का स्पष्ट ज्ञान प्रदान किया जाना चाहिए। छात्रों को उत्तम मानसिक भोजन दिया जाना चाहिए ताकि उत्तम के विचारों के वातावरण में विकास संभव हो सके। व्यक्ति की जन्मजात शक्तियों का विकास करके उसके व्यक्तित्व का सर्वांगीण और सामंजस्यपूर्ण विकास ही शिक्षा का उद्देश्य होना चाहिए। छात्रों को प्रकृति के घनिष्ठ सम्पर्क में रहकर शिक्षा दी जानी चाहिए। इस तरह हम पाते हैं कि टैगोर के शिक्षा दर्शन के कुछ मूलभूत सिद्धांत है जिसका पालन शिक्षा के उद्देश्यों की पूर्त्ति में सहायक सिद्ध हो सकती है। अतः शिक्षा के उद्देश्य का वर्णन टैगोर के शिक्षा दर्शन में करना आवश्यक हो जाता है।

शिक्षा के उद्देश्य : टैगोर के शिक्षा के उद्देश्य सम्बन्धी विचार उनके लेखों में निहित है उसी के आधार पर शिक्षा के निम्नलिखित प्रमुख उद्देश्य इस प्रकार है-

शारीरिक विकास : टैगोर सही शिक्षा के लिए स्वस्थ शरीर को अधिक महत्व देते थे। उनका कहना था कि- शारीरिक विकास के लिए अगर संभव हो तो अध्ययन को कुछ समय के लिए छोड़ देना चाहिए। शारीरिक विकास के लिए टैगोर ने खेल-कूद और व्यायाम के साथ पौष्टिक भोजन आदि को आवश्यक वतलाया है। इस तरह शारीरिक विकास शिक्षा का एक प्रमुख उद्देश्य है।

बौद्धिक विकास : शारीरिक विकास के साथ-साथ बौद्धिक विकास का होना आवश्यक बताया गया है। बौद्धिक विकास के लिए पुस्तकीय शिक्षा का टैगोर ने विरोध किया है साथ ही प्रकृति तथा जीवन से प्रत्यक्ष रूप से ज्ञान प्राप्त करना आवश्यक

Scanned by CamScanner

बतलाया है। टैगोर का कहना है कि-बौद्धिक विकास तभी संभव हो सकता है जब वास्तविक जीवन की परिस्थितियों में प्रत्यक्ष रूप से ज्ञान प्राप्त किया जाय। इस प्रकार बौद्धिक विकास वास्तविक जीवन से सम्बंधित उद्देश्य है जो सर्वाधिक महत्वपूर्ण है।

नैतिक और आध्यात्मिक विकास : शिक्षा का मूल उद्देश्य है-नैतिक और आध्यात्मिक विकास करना। टैगोर व्यक्ति के अंदर नैतिक और अध्यात्मिक गुणों के विकास को अधिक महत्व देते हैं। नैतिक तथा आध्यात्मिक गुणों का विकास करने के लिए आंतरिक स्वतंत्रता, आंतरिक शक्ति, आत्मानुशासन तथा ज्ञान को आवश्यक माना जाता है। इस तरह नैतिक तथा आध्यात्मिक विकास मनुष्य को अपने लक्ष्य की प्राप्ति में सहायक होता है।

पूर्ण मनुष्यत्व का विकास : टैगोर की शिक्षा का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य है-पूर्ण मनुष्यत्व का विकास करना। यह तभी संभव है जब व्यक्ति के समस्त सुप्त शक्तियों को विकसित किया जाय। पूर्ण मनुष्यत्व का विकास ही टैगोर की शिक्षा का चरम उद्देश्य है। इस तरह टैगोर व्यक्ति को स्वतंत्रता तथा सम्मान देने के पक्ष में थे ताकि व्यक्ति पूर्ण मनुष्यत्व को प्राप्त करने में सफल हो सके।

सामाजिक विकास : मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। अतः समाज सेवा मनुष्य का कर्त्तव्य बन जाता है। टैगोर समाज सेवा को शिक्षा का सर्वोत्तम लक्ष्य मानते थे। उनका कहना था कि- समाज और सामाजिक सेवा को उतना ही महत्व दिया जाना चाहिए जितना व्यक्ति तथा व्यक्तित्व को। व्यक्ति की आध्यात्मिक पूर्णता के लिए उसका सामाजिक विकास अति आवश्यक हो जाता है। इसलिए टैगोर शिक्षा के द्वारा व्यक्ति को एक ऐसे सामाजिक बन्धन से बाँधना चाहते थे। ताकि व्यक्ति सामाजिक विकास के लिए सदैव प्रयास करे। सामाजिक विकास के लिए टैगोर ने शिक्षा में जन सेवा को विशेष रूप से महत्व दिया है। अतः सामाजिक विकास टैगोर की शिक्षा विचार का मुख्य उद्देश्य है।

राष्ट्रीयता और अंतर्राष्ट्रीयता का विकास : टैगोर की शिक्षा का उद्देश्य राष्ट्रीयता तथा अंतर्राष्ट्रीयता का विकास करना भी है। अतः टैगोर ने अपनी शिक्षा के द्वारा व्यक्तियों में राष्ट्र-प्रेम की ओर विशेष रूप से आकर्षित किया तथा उनमें राष्ट्रीय एकता का भाव जगाने का प्रयास किया। राष्ट्रीयता के साथ-साथ अंतर्राष्ट्रीयता के विकास पर भी वे विशेष रूप से बल देते थे। इस तरह राष्ट्रीयता तथा अंतर्राष्ट्रीयता का विकास व्यक्ति में करना उनकी शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य माना जाता है। आज के बच्चों में भी राष्ट्रीयता तथा अंतर्राष्ट्रीयता की भावना को जागृत कराने का उद्देश्य आज की शिक्षा के लिए अनिवार्य हो जाता है। इस तरह टैगोर के शिक्षा दर्शन में शिक्षा के

Scanned by CamScanner

शिक्षा का पाठ्यक्रम : टैगोर ने भारतीय विद्यालयों में प्रचलित शिक्षा के पाठ्यक्रम को दोषपूर्ण बताया। उनके लेखों में शिक्षा के पाठ्यक्रम सम्बन्धी सामान्य विचार मिलते हैं। उन्होंने एक व्यापक पाठ्यक्रम का सुझाव दिया। टैगोर के अनुसार-शिक्षा के पाठ्यक्रम को इतना व्यापक होना चाहिए ताकि बालक के जीवन के सभी पक्षों का समुचित विकास हो सके और उसे पूर्ण जीवन की प्राप्ति में सहायक सिद्ध हो सके। टैगोर के अनुसार सच्ची शिक्षा का मुख्य उद्येश्य पूर्ण जीवन की प्राप्ति है। अतः उन्होंने पाठ्यक्रम में विभिन्न तरह के अनेक विषयों और क्रियाओं को स्थान देकर उसे व्यापक रूप प्रदान करने का प्रयास किया है। उन्होंने शिक्षा के पाठ्यक्रम में मुख्य रूप से इतिहास, भूगोल, विज्ञान, साहित्य, प्रकृति अध्ययन आदि विषयों को स्थान दिया। इन विषयों के साथ-साथ टैगोर ने विभिन्न क्रियाओं जैसे-अभिनय, नृत्य, संगीत, भ्रमण, बागवानी, प्रयोगशाला कार्य, ड्राइंग, व्यावहारिक विज्ञान, अजायबघर के लिए विभिन्न वस्तुओं का संग्रह आदि को भी शिक्षा के पाठ्यक्रम में स्थान दिया। इतना ही नहीं, टैगोर ने कुछ उद्योग धंधों, हस्तकला, चमड़े का काम, कताई, बुनाई, रंगाई, कागज बनाना आदि क्रियाओं तथा सहगामी क्रियाओं जैसे समाज सेवा, खेल-कूद, प्रदर्शन, स्वशासन आदि को भी शिक्षा के पाठ्यक्रम में महत्वपूर्ण स्थान दिया। इस तरह हम देखते हैं कि टैगोर ने शिक्षा में एक क्रिया प्रधान तथा अनुभव केन्द्रित पाठ्यक्रम का भरपूर समर्थन किया है।

शिक्षण विधि : टैगोर ने शिक्षण विधि में व्यावहारिक कार्यक्रम, कलात्मक अभिरूचि तथा क्रियाशीलता पर ध्यान देने वाले शिक्षण विधियों को अधिक प्रश्रय दिया है और कुछ सिद्धांतों का विवेचन किये हैं जो इस प्रकार हैः-

स्वानुभव द्वारा शिक्षण : टैगोर ने शिक्षा को बच्चों के जीवन पर आधारित बनाने का प्रयास किया। अतः शिक्षण विधि में बच्चों के स्वानुभव पर आधारित शिक्षण विधि को विशेष रूप से महत्व दिया। इस तरह की शिक्षण विधि से बच्चे उत्तम ढ़ंग से सीखते हैं।

क्रिया द्वारा शिक्षण : टैगोर ने अपने शिक्षा दर्शन में क्रिया द्वारा सीखने की कला पर विशेष जोर दिया है। वे शारीरिक, मानसिक तथा आध्यात्मिक विकास के लिए क्रिया को अधिक महत्व दिया। जैसे-दस्तकारी, हस्तकला, कताई, बुनाई आदि जैसे शिक्षण विधियों को शिक्षा में लागू करने का भरपूर प्रयास किया। इसके अलावा अनेकों क्रियाओं जैसे- पेड़ पर चढ़ना, कूदना, नृत्य करना, फल तोड़ना, हंसना, चिल्लाना, ताली बजाना आदि क्रियाओं को शिक्षण की अनिवार्य विधि मानते थे। इससे बच्चे गतिशील होते हैं और उनके शारीरिक तथा मानसिक विकास संभव होते है।

भ्रमण द्वारा शिक्षण : भ्रमण के द्वारा बच्चों का शारीरिक, मानसिक तथा बौद्धिक विकास होता हैं। भ्रमण शिक्षा का एक महत्वपूर्ण साधन है, भ्रमण में बच्चों की

Scanned by CamScanner